रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2021–23

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 45 ● अंक – 22 ● कानपुर 16 से 30 नवम्बर 2023 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹ 100

भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जब आदेश जारी कर दिया तो अब कोई समस्या नहीं केवल प्रतीक्षा है I.D.C. के निर्णय की

अब आप अपनी उपयोगिता सिद्ध करें

मांगना ही है तो भारत सरकार से सरकारी संरक्षण देने की मांग करें

महाराष्ट्र सरकार ने कमेटी गठित कर की पहल

आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक बार फिर अधिकारों को लेकर घमासान चालू है, हर तरफ अधिकारों की ही चर्चा ज़ोरों पर है, लोग इसी में व्यस्त हैं कि किसके पास अधिकार है और किसके पास नहीं है ?कभी कभी तो चर्चायें इतनी गरम हो जाती हैं जो कि स्थिति को भद्र से अभद्र तक ले जाती है।

प्रदेश का पूर्वांचल इलाका हो या पश्चिमी, हर ओर अधिकारों को लेकर माहौल गरम किया जा रहा है, हर संचालक अपने आप को अधिकार सम्पन्न बताता है और हमारा चिकित्सक भी अब इतना चतुर हो चुका है कि वह अपने से ज़्यादा किसी को समझदार नहीं मानता है।

अब तो परिणाम यह है कि एक नई अराजकता जन्म ले रही है यह सारे के सारे दृश्य एक नये परिदृश्य की संरचना कर रहे हैं और जब इन सारे परिदृश्यों को मिलाकर आने वाले भविष्य की कल्पना की जाती है तो बहुत ज़्यादा आशा बलवती नहीं होती है ! समाज का नियम है कि वह परिवर्तन के साथ चलता है परिवर्तन प्रकृति करे तो कोई बात नहीं परन्तु जब परिवर्तन की दिशा आप बदल दें तो मन सोचने को विवश हो जाता है।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अभी तक कार्य करने के लिए वातावरण अच्छा है, शासकीय सोच भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ है, सरकार का सहयोग और समर्थन लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथों को मिल रहा है, उ0प्र0 सरकार के 04 जनवरी, 2012 के शासनादेश से प्रभावित होकर महाराष्ट्र सरकार ने मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अध्यक्ष श्री सतीश जगदाले के प्रयास से इलेक्ट्रो होम्योपैथों के पंजीयन के लिये एक समिति भी गठित कर दी है, फिर ऐसी कौन सी नई स्थिति पैदा हो जाती है जो हमारे साथी विचलित हो जाते हैं और विचलन भी इस प्रकार का होता है जिससे कि वह कुछ ऐसा कर डालते हैं जिससे कि नई परिस्थितियां जन्म ले लेती हैं। आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबसे महत्वपूर्ण विषय है चिकित्सकों के पंजीयन का।

- ✓ अधिकार तो आपको पहले से ही प्राप्त है
- ✓ अपने अधिकारों का प्रयोग करना समझें
- ✓ आर0टी0आई0 से अब कोई लाभ नहीं
- ✓ आवश्यकता है अपने कार्यों को दें प्रमुखता
- ✓ अब व्यर्थ के कार्यों में ऊर्जा नष्ट न करें
- ✓ सम्भावनायें तो पल–प्रतिपल बदलती ही हैं
- ✓ इच्छाओं की पूर्ति केवल कार्य से ही सम्भव

उ0प्र0 में अगस्त 2016 से पंजीयन की व्यवस्था में परिवर्तन हुआ है परिवर्तित व्यवस्था के अनुसार आयुर्वेद एवं युनानी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों का पंजीयन क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं युनानी अधिकारी कार्यालय में हो रहा है।

होम्योपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन ज़िला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी **(DHO)** कार्यालय में हो रहा है।

अब केवल एलोपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में होता है।

बात आती है इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की।

यह सर्व विदित है कि भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा दिनांक 21 जुन, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन आफ़ इण्डिया को एक नियामक इकाई मानते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रैक्टिस, शिक्षा, एवं अनुसंधान हेतु आदेश जारी किया।

भारत सरकार के आदेश के तुरन्त बाद 04 जनवरी, 2012 को उ0प्र0 सरकार ने विधिवत बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 के लिये शासनादेश जारी करते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति की शिक्षा, चिकित्सा, रजिस्ट्रेशन अनुसंधान एवं विकास पर बल दिया है।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 से पंजीकृत समस्त चिकित्सकों के लिये ज़िला पंजीयन की 2 व्यवस्थायें की गयी हैं प्रथम व्यवस्था के अनुसार अनेक जनपदों में ज़िला प्रभारियों की नियुक्ति की गयी है जहां पर

शेष पेज 2 पर

यह खामोशी कहीं तूफान आने के पहले की शान्ति तो नहीं!

पिछले कुछ महीनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन में एक अजीब सी शान्ति है जितने भी आन्दोलनकारी थे वह समाज में तो दिख रहे हैं परन्तु उनकी गतिविधियां ठप्प सी दिख रही हैं, आज से कुछ माह पहले जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते थे पता नहीं उनकी सक्रियता को क्या हो गया है (फेस–बुक, वाहटसएप,ट्वीटर इन्सट्राग्राम के पन्ने खाली जा रहे हैं) यह सब देखकर मन यह सोचने पर विवश हो जाता है कि कहीं यह सब तूफान आने के पहले की शान्ति तो नहीं है ?

यह सोचकर मन में तरह–तरह की शंकायें जन्म लेने लगती हैं और भय भी लगने लगता है, शंकाओं का जन्म लेना और भय का लगना इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्वभाविक सी बात है क्योंकि जबसे हमने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कदम रखा है तबसे तरह–तरह के तूफानों का सामना किया है, यह अलग बात है कि अभी तक कोई भी ऐसा तूफान नहीं आया जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाप्त करने में सक्षम रहा हो ! हाँ तकलीफें ज़रुर दी हैं, नये–नये विवादों को जन्म दिया है, परन्तु यह हम ही थे जिसने हर बार गिरकर उठना सीखा है, परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हों हमें परिस्थितियों की दिशा मोड़ना आता है लेकिन दिशायें मोड़ते–मोड़ते दिशाहीन होने का भय भी सताता रहता है, कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को सफल बनाने के लिये एक निश्चित दिशा का होना बहुत ही आवश्यक है आज के परिदृष्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में ज़बरदस्त कार्य की आवश्यकता है क्योंकि यही एक मात्र ऐसा रास्ता बचा है जिस पर चलते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित किया जा सकता है, कुछ लोग काम करने के विषय पर तर्क देते हैं कि कार्य कैसे किया जाये ? ऐसे लोगों के लिये समझने के लिये यह एक आसान तरीका है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता ही उसकी सार्थकता को सिद्ध करती है हम लोग बात–बात पर एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति का उदाहरण देते हैं कि यह पद्धति कितनी कारगर है इसके डाक्टर कितने सम्पन्न होते हैं हर ओर मान सम्मान मिलता है यह सारी बातें कहने व सुनने में तो बहुत अच्छी लगती हैं परन्तु हकीकत में हम केवल सिक्के का एक ही पहलू देखते हैं और वह है सिक्के की चमक, हमको यहाँ पर यह भी सोचना चाहिये कि इस चमक को पाने के लिये कितना प्रयास और कष्ट झेला गया होगा !

जिस समय एलोपैथी स्थापित होने का प्रयास कर रही थी उस समय पूरे देश में आयुर्वेद का बोल–बाला था वैद्यों का सर्वत्र सम्मान था लेकिन एलोपैथ के समर्थकों ने इस कदर मेहनत की आयुर्वेद को ही किनारे लगा दिया, ठीक इसी प्रकार हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि हम सब भी मिलकर कोई ऐसा कार्य करें जिससे कि किसी पद्धति को तो हमें किनारे नहीं करना है लेकिन हम अपनी सार्थकता तो सिद्ध कर ही सकते हैं, हमारे सारे आन्दोलन और सारी गतिविधियां तभी सार्थक होंगी जब हमारा कार्य सर चढ़कर बोलेगा, सम्मान तो व्यक्ति का नहीं अपितु उसके द्वारा किये गये कार्यों का होता है, इसलिये हम सबका यह नैतिक दायित्व है कि हम सब मिलकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सार्थक सामूहिक ऐसे कार्य करें जिससे कि शीघ्र से शीघ्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संरक्षित होने का मार्ग प्रश्स्त हो सके, रास्ते तो कभी बन्द नहीं होते ! हाँ ढूँढने वाला चाहिये !! एक कहावत भी है कि जहाँ चाह वहीं राह, हमें जल के प्रवाह से सीख लेनी चाहिये, जल के प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता अगर एक मार्ग अवरुद्ध किया जाता है तो दूसरी राह जल स्वयं ही बना लेता है, ठीक इसी प्रकार से हमारे पास भी कार्य करने के अनेकों अवसर हैं, बस आवश्यकता इस बात की है कि सही समय पर उन अवसरों को हम प्रयोग में ला सकें, शान्ति से बैठना, निराश होकर बैठना, या जो मिल गया उतना ही ठीक है या फिर क्या फ़ायदा काम करने से आगे तो कुछ हो नहीं सकता, इस प्रकार के निरर्थक विचारों को मन से त्याग कर एक नये उत्साह के साथ हम सभी को कार्य में लगना चाहिये, बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयास भी सघन और बड़े करने पड़ते हैं, कार्य में खामोशी नहीं जोश के दर्शन होने चाहिये।

वर्तमान में हमारे पास राजस्थान राज्य एक ऐसा उदाहरण है जहां 5 वर्ष पूर्व अर्थात 2018 में तत्कालीन सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु एक बिल पारित किया गया था जिसे राज्यपाल की स्वीकृति भी प्राप्त है उस पर पूरी तनमयता के सथ कार्य करने की आवश्यकता है।

प्रथम पेज से आगे

भारत सरकार ने 21 जून, 2011 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जब आदेश जारी कर दिया तो अब कोई समस्या नहीं

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अपना आवेदन जमा कर सकता है ज़िला प्रभारी द्वारा सम्बंधित चिकित्सक का पंजीयन आवेदन बोर्ड के मुख्यालय अथवा प्रशासनिक कार्यालय में प्रेषित कर दिये जाते हैं वहां से उक्त चिकित्सक का प्रमाण–पत्र ज़िला प्रभारी के माध्यम से चिकित्सक को उपलब्ध करा दिया जाता है,

दूसरी व्यवस्था के अनुसार जिन जनपदों में ज़िला प्रभारी का कार्यालय नहीं है उन जनपदों के चिकित्सक बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 के क्षेत्रीय कार्याल जो लखनऊ एवं कानपुर में थित हैं वहां सीधे भेजकर प्रमाण–पत्र प्राप्त किया जा सकता है ज्ञातव्य हो कि ज़िला पंजीयन कराने हेतु कोई भी शुल्क नहीं लिया जाता है।

ज़िला पंजीयन इसलिए आवश्यक है कि जांच के समय कोई भी अधिकारी आप पर यह आरोप न लगा सके कि आपने प्रचलित व्यवस्था का अनुपालन नहीं किया है इसलिए आप चिकित्सा व्यवसाय के अधिकारी नहीं हैं, यदि आपने पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत कर रखा है तो आप जांच अधिकारी से आंख मिलाकर बात कर सकते हैं और प्राप्त अधिकारों के बारे में उस अधिकारी को बता भी सकते हैं, जिससे कि आपकी अपनी प्रैक्टिस की वैधानिकता और अधिकारिता की प्रमाणिकता सिद्ध हो जाती है।

इन्हीं सब विषयों को लेकर हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक नेताओं के मध्य मतयक्ता नहीं है वह एक दूसरे के विरूद्ध टिप्पणी करने से भी बाज़ नहीं आते हैं इस तरह के कार्यों से हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के मन में भ्रम की स्थिति पैदा होती है और भ्रमित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक निर्णय लेने में सक्षम नहीं हो पाता, परिणाम यह होता है कि हमारे अधिकांश चिकित्सक अनिर्णय में पड़े रहते हैं अधिकार होते हुए भी अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

कदाचित ऐसी स्थिति का यदि जन्म न हो तो ही अच्छा है और यदि परिस्थितियों वश जन्म हो ही जाता है तो उनका शीघ्र शमन होना भी अति आवश्यक है, शमन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि जब कोई विषय बहुत लम्बे समय तक अनिर्णीत रहता है तो लोगों का विश्वास उससे उठने लगता है, डगमगाये विश्वास वाला व्यक्ति कभी भी अपेक्षित परिणाम नहीं देता क्योंकि उसकी मनःस्थिति स्थिर ही नहीं रह पाती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि बहुत दूर तक आगे ले जाना है तो यह सभी ज़िम्मेदारों का दायित्व है कि कोई ऐसी कार्य योजना तैयार करें जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज में फैली भ्रांतियां दूर हों, अधिकारिता और अनाधिकारिता पर चर्चाओं की अब कोई आवश्यकता नहीं है, कार्य करने की प्रवृत्ति का जागरण करना होगा तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास सम्भव हो पायेगा।

जब विकास की बात चलती है तो यह बात आती है कि क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास नहीं हो रहा है ? तो यदि विचार करें तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास का आंकलन उस चिकित्सा पद्धति के जनप्रयोग पर आधारित होता है दूसरा उसकी शिक्षण व्यवस्था पर, विकास में निरन्तरता बनी रहे इसके लिए अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य होते रहने चाहिये चूंकि अनुसंधान ही हमें नवीनता से परिचय कराता है।

यदि हम कुछ वर्षों पूर्व के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास पर दृष्टि डालें और देखें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कितनी प्रैक्टिस हो रही है ? समाज में इसे कितना स्वीकारा जा रहा है ? तो इसके आंकलन का सीधा–साधा रास्ता है कि औषधियों की मांग और पूर्ति का अनुपात क्या है ? आज से 25 वर्ष पूर्व तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां चन्द लोग ही बनाते थे, मांग भी बहुत कम थी, इन 25 सालों के अन्दर पूरे देश में एक सैकड़ा से ज़्यादा दवा निर्माण इकाईयां असित्व में आई हैं और हर कम्पनी दावा करती है कि उनकी कम्पनी लाखों का वार्षिक टर्न–ओवर करती है, नित नई कम्पनियां खुलती जा रही हैं यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, प्रैक्टिस भी बढ़ी है, सीधा सी बात है कि दवा खरीदी जाती है तो व्यवहार में भी लायी जाती होगी, यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है, हाँ एक बात ज़रूर है कि आज की पीढ़ीयों में टकराव के स्पष्ट दर्शन होते हैं जो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं वह परम्पराओं पर विश्वास करते हैं और मैटी के सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं करना चाहते हैं फलतः नई पीढ़ी के लोग कभी कभी ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो कि नई व्यवस्थाओं को जन्म दे देते हैं।

प्रायः हमारे साथी यह सवाल करते हैं कि अब नया क्या हुआ ? यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिसका उत्तर हर एक को स्वीकार नहीं होता, जीवन में नवीनता तो आती है लेकिन नयापन बार–बार नहीं होता इलेक्ट्रो होम्योपैथी दृढ़ता से स्थापित हो उसका यथा सम्भव विकास हो, शासकीय संरक्षण और ज़्यादा प्राप्त हों हमारे साथियों को भी शासकीय सेवाओं में अवसर मिले यह सारी कि सारी कामनायें तभी फलीभूति होंगी जब पीढ़ियों के बीच वैचारिक समानता जन्म लेगी, अपने विचारों को रखना हर एक का अधिकार है, लेकिन अपने ही विचारों को थोपना हर किसी को स्वीकार नहीं होता, नई पीढ़ी की जो बात पद्धति के लिए हितकारी हो जिससे चिकित्सा पद्धति का भला हो ऐसे विचारों को पुरानी पीढ़ी को भी स्वीकारने में गुरेज़ नहीं करना चाहिये, इसके साथ–साथ नई पीढ़ी का दायित्व है कि वह इतिहास को न बदलें क्योंकि इतिहास हमारी धरोहर है, धरोहर को सजोना नई पीढ़ी का दायित्व है जब सबका लक्ष्य एक है तो कटुता के दर्शन नहीं होने चाहिये, आज जो भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े है उनकी यही इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो, इसलिए हमें वही रास्ते ढूंडने होंगे जिसपर चल कर हम सब एक नये सुप्रभात का इंतजार कर रहे हैं।

कभी भी सम्भावनायें खत्म नहीं होती हैं, कब क्या हो जाये ! यह हम सब नहीं जान सकते परन्तु इसी विचार में पड़े रहकर कार्य न करें, यह भी उचित नहीं है हमें जो अधिकार और जो अवसर प्राप्त हैं हमें उनका भरपूर उपयोग करना चाहिये और कार्य करते हुए लक्ष्य की प्राप्ति करनी होगी, प्रतीक्षा का समय अब ज्यादा नहीं है जो वर्तमान दृश्य दिखायी दे रहा है वह अच्छाई की ओर संकेत दे रहा है, इसलिए अनिर्णय की स्थति से उबरकर सकारात्मक निर्णय लें और पूरे उत्साह और जोश के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में लग जायें, इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबकी है इसपर किसी का विशेषाधिकार नहीं है, यह अलग बात है कि आज कुछ संस्थाओं को यह अधिकार प्राप्त है लेकिन कार्य करने का अधिकार और कार्य करने के लिए सभी के लिए रास्ते खुले हैं, अधिकार जताने की होड़ में जोश में आकर हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे कि चिकित्सा पद्धति और उससे जुड़े चिकित्सक और चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे व्यक्तियों का नुकसान न हो, इलेक्ट्रो होम्योपैथी असीमित है इसको सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है, अनुसंधान वह क्षेत्र है जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को और अधिक जनोपयोगी बनाया जा सकता है इसलिए आईये हमसब मिलकर सकारात्मक विचारों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

Why you people are worried ?

GO TO THE FACT

Government of India Ministry of Health & Family welfare (Department of Health Research) has clarified that

There is no proposal to stop the petitioner from practicing in electropathy, electro homoeopathy, etc. as long as this is done within the parameters of the order dated 25-11-2003 and when the legislation to recognised new system of medicine is enacted any practice or education would be regulated in accordance with the said Act.

As per directions of the Hon, Lucknow bench of the High Court of Judicature at Allahabad, the representation has been considered. It is clarified that the MH&FW Order No. R14015/25/96-U&H(R)(Pt.) dated 25-11-2003 and No. v.25011/276/2009-HR dated 05-05-2010 would be treated as instructions of Government of India related to practice, education and research with regard to alternative systems of medicine like electropathy, electro homoeopathy, etc.

Issued in public interest.

CEBAR EXPERT SEMINAR SERIES 7/2023

7 Dec 2023, 2.30pm - 3.30pm (Malaysia time)
Join the webinar via Microsoft Team (**Link**)

Nanobiotechnology: Tiny Revolution with Big Impact in Science

Prof. (Dr.) Nabeel Ahmad
(School of Allied Sciences, Dev Bhoomi Uttarakhand University, Dehradun, India)

ABSTRACT

Nanotechnology is emerging as a transformative field with profound implications across diverse sectors, underscoring its paramount importance in today's world. At the nanoscale, materials exhibit unique properties and behaviors, enabling unprecedented breakthroughs in science, technology, and medicine. This abstract highlights the significance of the upcoming field of nanotechnology. Nanotechnology promises groundbreaking advances in materials science. Nanostructured materials possess exceptional strength, conductivity, and reactivity, revolutionizing industries like electronics, aerospace, and energy storage. Such innovations hold the potential to enhance product performance, reduce resource consumption, and mitigate environmental impacts. Furthermore, nanotechnology's influence extends to the environmental sector, offering novel solutions for clean energy production, pollution remediation, and sustainable agriculture. Nanomaterials enable efficient catalysts, solar cells, and water purification systems, addressing global challenges like climate change and resource scarcity. In conclusion, the importance of nanotechnology lies in its transformative potential to reshape industries, enhance human health, and address critical environmental issues. Harnessing the power of the nanoscale is not only essential for technological progress but also holds the key to solving some of the most pressing challenges of our time. One of the most popularly used nanoparticle is silver nanoparticle. Silver nanoparticles (AgNPs) have been used in various medicinal and commercial products because of their exceptional anti-microbial and anti-odor properties. Further, the talk also focuses on research involved with the synthesis of AgNPs from aqueous-leaf-extract of *Mentha piperita* and its effect on one of the most important neurological enzymes i.e. acetylcholinesterase (AChE) to predict its neurotoxicity.

Centre For Research In Biotechnology For Agriculture
Level 3, Research Management & Innovation Complex,
Universiti Malaya, 50603, Kuala Lumpur
Tel: +603 7967 6990/6993 | Fax: +603 7967 6991
Email: cebar@um.edu.my

UNIVERSITI MALAYA

DEV BHOOMI —UTTARAKHAND— UNIVERSITY

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।